सुंदरबन के बाघ पीड़ित परिवारों के जीवन में नयी रोशनी फैला रहा एक कर्मठ शिक्षक

'सुंदरबन में रॉयल बंगाल टाइगरों का हमला और पीड़ितों की जीवन गाथा प्रकृति और मानव के बीच के सबसे क्रूर और दर्दनाक संघर्षों में से एक है. दुनिया के सबसे बड़े मैंग्रोव जंगल सुंदरबन के कई इलाके निषेध हैं, लेकिन रोजी-रोटी के लिए स्थानीय लोग मछली, केकड़े पकड़ने और शहद संग्रह करने के लिए अक्सर वहां जाते हैं और बाघ के हमले के शिकार हो जाते हैं. ऐसी कई घटनाएं हुई हैं, जहां पांच साथियों में से एक को टाइगर उनकी आंखों के सामने ही घसीट कर ले गया, हालांकि बाकी चार साथी बचाने की पूरी कोशिश करते हैं लेकिन टाइगर के जानलेवा हमले के आगे परास्त हो जाते हैं. कइयों की तो लाश भी नहीं मिलती है. यही प्राकृतिक सौंदर्य से घिरे सुंदरबन की कड़वी सच्चाई है. कटु सत्य यह भी है कि बाघ पीड़ित परिवारों की आर्थिक-सामाजिक स्थिति काफी दयनीय है. कुछ दानदाताओं के सहयोग से ऐसे परिवारों की मदद कर उनके अंदर जीने की एक ललक पैदा की जा रही है. यह जानकारी वरिष्ठ संवाददाता **भारती जैनानी** से हुई एक विशेष बातचीत में चंपा महिला सोसाइटी के संस्थापक और सोशल एक्टिविस्ट अमल नायक ने दी. सुंदरबन के बासंती ब्लॉक के शिबगंज इलाके (साउथ 24 परगना) में जन्मे, पले- बढ़े और बाघ पीड़ित परिवारों को जीवन की एक नयी दिशा देने वाले अमल नायक ने अपने अनुभव साझा किये.



एक नजर में अमल नायक

- शिबगंज गांव, बासंती ब्लॉक, सुंदरबन, साउथ 24 परगना, प .बंगाल में जन्म
- शिक्षा : शिबगंज प्राइमरी स्कूल, सुंदरबन आदर्श विद्या निकेतन और बासंती हाई स्कूल से एचएस .
- विद्यासागर कॉलेज, कलकत्ता यूनिवर्सिटी से उच्च शिक्षा
- अलग-अलग प्राइमरी, हाई स्कूल और गांवों में पीने के पानी के लिए 42 ट्यूबवेल लगवाये, जहां स्टूडेंट्स और गांव के 30000 लोगों को पीने का पानी मिल रहा .
- गरीब परिवारों की बाउंड्री में 11000 फलों के पेड़ लगवाये .
- सुंदरबन के कई द्वीपों में अम्फान के समय तिरपाल, अनाज व राहत सामग्री पहुंचायी .
- सुंदरबन के बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए कई हेल्थ कैंप लगवाये . बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरित की .
- अपनी टीम के सहयोग से सुंदरबन, उसकी बायो डाइवर्सिटी, नदी के किनारे को बचाने के लिए निरंतर सक्रिय
- ग्रामीण इलाके में ऑर्गेनिक खेती के लिए महिलाओं को प्रेरित करने, अनाथ बच्चों की शिक्षा व बाघ पीड़ित परिवारों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए कई स्टेट और नेशनल अवॉर्ड से हुए सम्मानित .



बाघ-विधवाओं को 'स्वामी खेजो' कहकर किया जाता है अपमानित

कई सालों से सुंदरबन के बाघ पीड़ित परिवारों की सहायता कर रहे अमल नायक एक शिक्षक हैं और लंबे समय से स्थानीय कम्युनिटी के पिछड़े बच्चों के लिए 'चाइल्ड ओरिएंटेड प्रोग्राम' चला रहे हैं. बच्चों के डेवलपमेंट और उनके नैतिक विकास के लिए 'चंपाबती तरुणतीर्थ' की शुरुआत की. श्री नायक बताते हैं कि पर्यटकों व रिसर्च करने वालों के लिए सुंदरबन, जहां एक आकर्षक स्थल है, वहीं स्थानीय लोगों और बाघ पीड़ित परिवारों का यहां हरेक दिन एक संघर्ष है, एक चुनौती है. जिन महिलाओं के पति टाइगर हमले में मारे जाते हैं, उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाता है. अंधविश्वास और रूढ़िवादी सामाजिक सोच के कारण, जिन महिलाओं के पतियों को बाघ मार देता है, उन्हें समाज में 'मनहूस' या अपशकुन माना जाता है. कुछ गांवों में तो इन्हें 'स्वामी खेजो' (पति को खाने वाली) या डायन तक कहकर प्रताड़ित किया जाता है और उनके ससुराल वाले उन्हें घर से निकाल देते हैं. उनको किसी उत्सव में नहीं बुलाया जाता था. यह उनके लिए दोहरी पीड़ा होती है. लेकिन अच्छी बात यह है कि 'चंपा महिला सोसायटी की स्थापना व अवैरनेस प्रोग्राम के बाद लोगों की सामाजिक चेतना बढ़ी है और पिछड़े इलाकों में सकारात्मक रूप से काफी बदलाव आया है. बाघ पीड़ित परिवारों के बच्चों के लिए भी स्कूल खोला गया है, ताकि वे शिक्षित होकर समाज की मुख्यधारा से जुड़े और स्वावलंबी बनें. कम्युनिटी के अनाथ, पिछड़े बच्चों की मदद के लिए चंपाबती शिशु उद्यान और महिलाओं के इकोनॉमिक डेवलपमेंट के लिए बासंती महिला को-ऑपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी भी बनायी गयी है.



कानूनी और आर्थिक संघर्ष से जूझ रहे हैं बाघ पीड़ित परिवार

सुंदरबन के ग्रामीण इलाकों में कई सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय अमल नायक का कहना है कि सुंदरबन के घने जंगलों में बाघ सामने से नहीं, बल्कि अपने कार्य में व्यस्त मछुआरों पर पीछे से या नावों पर कूदकर अचानक गर्दन पर हमला करते हैं और शिकार को घने दलदली जंगलों में खींच ले जाते हैं . सुंदरबन के कई गांवों में लगभग हर दूसरे घर में बाघ के हमले की कोई न कोई कहानी है . टाइगर के हमले से यानि कि मौत के मुंह से बचकर आने वाले कई लोग अपनी एक आंख या कान गंवा चुके हैं, कइयों का चेहरा विकृत हो जाता है . इन हमलों का सबसे बड़ा खामियाजा घर की महिलाओं को भुगतना पड़ता है . दुख की बात यह है कि लाइसेंस प्राप्त मछुआरों के मारे जाने पर उनकी पत्नी या परिवार को मुआवजा लेने के लिए भी लंबी कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ती है . पश्चिम बंगाल सरकार के नियमों के अनुसार, जंगली जानवरों के हमले में मौत होने पर 5 लाख रुपये के मुआवजे का प्रावधान है, लेकिन अगर, कोई मछुआरा प्रतिबंधित 'कोर एरिया' में बिना वैध परमिट के प्रवेश करता है और उसका शव बरामद नहीं होता, तो वन विभाग अक्सर उस मौत को अवैध मानकर मुआवजा देने से इनकार कर देता है . इस स्थिति में महिलाएं गहरे अवसाद में पड़ जाती हैं . अत्यधिक गरीबी के कारण, पतियों की मौत के बाद भी इन महिलाओं के पास कोई और काम नहीं होता . अपने बच्चों का पेट भरने के लिए इन्हें दोबारा उसी खतरनाक जंगल और नदियों में केकड़े व मछलियां पकड़ने जाना पड़ता है, जहां उनके पतियों की जान गयी थी . यानि कि हर समय उनके सिर पर मौत का खतरा मंडराता रहता है .

दुर्गा पूजा में होता है 'टाइगर विडोस' का विशेष सम्मान

नवंबर, 1989 में बासंती हायर सेकेंडरी स्कूल में इंगलिश के शिक्षक के रूप में नियुक्त, किये गये सोशल एक्टिविस्ट अमल नायक ने जानकारी दी कि 35 सालों तक सुंदरबन में बच्चों को पढ़ाने के साथ कम्युनिटी के अनाथ बच्चों के लिए काम करते रहे . बाघ पीड़ित परिवारों को राशन सामग्री देने के साथ दुर्गा पूजा जैसे बड़े उत्सव में बुलाकर सम्मानित भी किया जाता है . महालय के दिन लगभग 500 बाघ विधवाओं को नयी साड़ी, घर का राशन, उपहार और आर्थिक सहायता प्रदान की गयी . यह सम्मान उनके अंदर खुशी के साथ आत्मविश्वास भी पैदा करता है . इस मौके पर कलकत्ता साउथ सिटी टावर्स रोटरी ट्रस्ट के राजेश गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे . कार्यक्रम में कुमुद चंद्र कर, रोटरी क्लब, गार्डनरीच से डॉ . सुब्रत लाहिड़ी ; कलकत्ता जंक्शन के इनर व्हील क्लब से संगीता घोष, एक्टर दीपांजन भट्टाचार्य, प्रसेनजीत चटर्जी, शिल्पी पालित, बप्पादित्य मित्रा, आईबीएम से मौसमी साहा, आनंदम से तपन रॉय चौधरी, साधन सत्य वेलफेयर ट्रस्ट से प्रसेनजीत चौधरी, हाल्टी सोशियो कल्चरल फाउंडेशन से सुब्रत मजूमदार, रोटरी क्लब से मुकुल कर्मकार, जयति साहा कुंडू, बरुण दे, चयन चक्रवर्ती, रोटरी क्लब से मुकुल कर्मकार, ममता नायक, बासंती महिला को-ऑपरेटिव से संचिता हल्दर भी शामिल हुईं . सुंदरबन के बाघ पीड़ित परिवारों के मिलन उत्सव के मौके पर बिजोन भौमिक, फोआरा दत्ता, किरणमय मित्रा, सुबोध चंद्र घोषाल, शांतनु मुखर्जी, रोटेरियन तपन रॉय, 'दे वैरिटेबिल ट्रस्ट' अनंत सेवा फाउंडेशन के सुरजीत दे और सेल्फ हेल्प ग्रुप्स के प्रोफेसर विश्वजीत दास ने प्रोग्राम को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया . इन अतिथियों ने बाघ पीड़ित परिवारों को हर संभव सहायता देने, सोसायटी के अंडर में सुंदरबन के आइलैंड में चल रहे दो पाठशालाओं में भी सहयोग करने का आश्वासन दिया .

